भक्तिकालीन
संत काव्य धारा

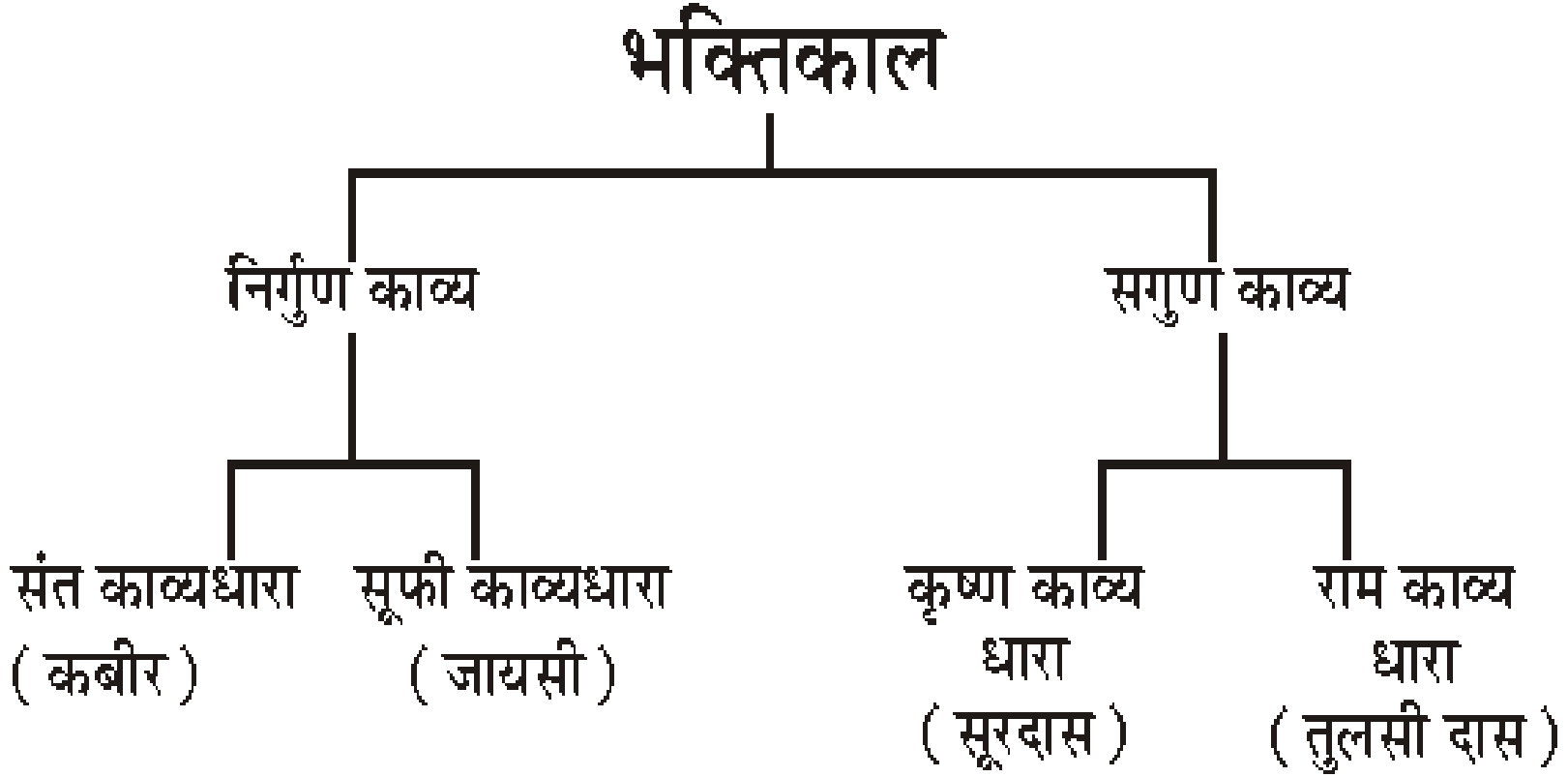
भक्तिकाल
निर्गुण काव्य
सगुण काव्य
संत काव्यधारा
(कबीर)
सूफी काव्यधारा
(जायसी)
कृष्ण काव्य
धारा
(सूरदास)
राम काव्य
धारा
(तुलसी दास)

निर्गुण ब्रह्म की उपासना पर जिन भ€त कवियों ने बल देकर अवतार भावना, मूर्तिपूजन, तीर्थ, व्रत आदि का खंडन किया वे ज्ञानमार्गी संत कहलाए। आचार्य रामचंद शु€ल ने इसे भ€तिधारा को निर्गुण ज्ञानाश्रयी शाखा, आ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इसे निर्गुण साहित्य तथा डॉ. रामकुमार वर्मा ने इसे संत काव्य पर□रा के नाम से अभिहित किया है। कबीर इस काव्यधारा ने प्रतिनिधि कवि हैं।

- **प्रमुख कविः**– कबीरदास, दादू दयाल, रविदास, गुरुनानक संत सहजोबाई, दादू दयाल सुंदरदास, धन्ना जट्ट इत्यादि।

क. भावगत विशेषताएं

- **क. एकेश्वरवाद में विश्वास :-** संत कवि मानते हैं कि परमात्मा एक है वही सबका स्रष्टा है उसी से हम सब उत्पन्न हुए हैं।

  एकै पवन एक ही पानी एक ज्योति संसारा

  एक खाक ते घड़ै सब भांडे एक ही सिरजनहारा।

- **ख. अवतारवाद का विरोध :-** संत कवियों ने अवतारवाद का विरोध किया है। उन्होंनें अलक्षित, ब्रह्म को सर्वशक्तिमान माना है। उनके अनुसार सभी अवतार जन्म-मरण के बंधन से ग्रस्त होते हैं वे सब भी ब्रह्म के ही अधीन होते है :

  त्रिदेवा शाखा भए, पात भया संसार ।

  अक्षय पुरुष इक पेड़ है, निरंजन बाकी डार।

- **फ. निर्गुण ईश्वर में विश्वास :-** सभी संत कवियों ने निर्गुण, निराकर ईश्वर में अपना विश्वास व्य€त किया है। कबीर के राम दशरथ सुत राम नहीं है वरन् निर्गुण निराकार ब्रह्म है उसी को उन्होंने हरि, गोविंद कहा है । कबीर कहते हैं

  निर्गुण राम जपहु रे भाई

  अविगत की गति लखि न जाई ।

- **ब. गुरु का महत्व:-** ईश्वर की प्राप्ति के लिए सदगुरु का अत्यधिक महत्व है। इसीलिए संत काव्य धारा में गुरु को परमात्मा से श्रेष्ठ बताया है:-

  गुरु गोविन्द दोउ खड़े, काके लागू राय

  बलिहारी गुरु आपनो जिन गोविंद दियो बताए।

- **भ्.माया का विरोधः-** संत कवि ज्ञान के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा माया को समझते हैं । साधक माया के पास में बंध कर इस संसार में भटक जाता है और वास्तविक लक्ष्य की प्राप्ति से वंचित रह जाता है। इन्होंने माया के दो रूप बताए है -धन और स्त्री । उन्होंने कहा है कि

  कंचन और कामिनी

  दुर्गम घाटी दोय।

- **म्. नारी के प्रति दृष्टिकोणः-** कबीर की भ€ित भावना के साधनापक्ष में नारी से विर€ित का संकेत मिलता है। उनकी दृष्टि में नारी माया का प्रतिरूप है जो साधना मार्ग में बाधा है:- **नारी की झाईं फरत, अंधा होत भुजंन**

  कबिरा तिनकी का गति, जो नित नारी संग।

- परन्तु संत कवियों ने पतिव्रता नारी की स्तुति भी की है :-

  पतिव्रता मैली भली, काली कुचित कुरूप

  पतिव्रता के रूप पर , वारो कोटि सुरूप ।

- **स्त्र. रहस्यवाद :-** आत्मा-परमात्मा के अलौकिक प्रेम को रहस्यवाद कहते हैं । संत कवियों ने प्रेम की संयोग और वियोग दोनों अवस्थाओं को लिया है। प्रेम का वियोग पक्ष द्रष्टव्य है:-

  आषड़िया प्रेम कसाइयां, लोग जाणै दुखड़िया
  साईं आपणे कारण, रोई रोई रातड़िया।

- आत्मा और परमात्मा के अद्वैत संबंध को भी लिया गया है।

  जल में कु□, कु□ में जल है
  भीतर बाहर पानी
  फूटा कु□ जल जलहिं समाना
  यह तथ कह्यौ गियानी।

- इस दोहे पर शंकर के अद्वैतवाद का प्रभाव दिखाई देता है।

- **त. जाति–पाति का विरोध**–अधिकांश कवि निम्न जाति से संबंधित थे। कबीर जुलाहा तथा रैदास चमार जाति से संबंधित थे । निम्न जाति से संबंधित होने के कारण उन कवियों को सामाजिक समस्याओं का सामना करना पड़ा इसीलिए उन्होंने अपने काव्य में जाति–प्रथा का विरोध किया।

जाति–पाति पूछे न कोय

हरि को भजै हरि का होय।

- **–. बाहरी आडम्बरों का विरोध:**– उस समय लोग धर्म के वास्वविक अर्थ को भूलकर व्यर्थ के आडम्बरों में उलझे हुए थे । ऐसे समय में कवियों के धर्म के नाम पर चलने वाले समस्त आडम्बरों का विरोध किया जिनमें मूर्ति पूजा, बलि प्रथा, व्रतों , उपवासों आदि का विरोध आता है।

क. दिन भर रोज़ा रखत है, रात हनत है गाय

यह रोजा यह बंदगी कैसी खुसी खुदाय ।

ख. जाको दूध धाय करि पीजै

ता माता सा वध €यों कीजै।

- **क. संसार की क्षणभंगुरता का चित्रण:-** संत कवियों ने अपने काव्य ने अपने काव्य में संसार की क्षणभंगुरता तथा नशवरता का वर्णन किया है। उन्होंने मानव को इस क्षणिक जीवन में मोह-माया के विकार से मु€त होकर प्रभु भ€ित के द्वारा जीवन सार्थक करने की प्रेरणा दी है।

  पानी केरा बुदबुदा अस मानस की जात।

  देखत ही मिट जायेगा, ज्यूं तारा प्रभात ।

- **क्क. कोरे पुस्तकीय ज्ञान का विरोध :-** संत कवियों ने ऐसे थोथे व कोरे, पुस्तक ज्ञान का विरोध किया है, जिसे व्यवहार में नहीं लाया जाता है। ऐसे ज्ञान की अपेक्षा उन्होंने प्रेम को महत्व है।

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय
ढाई आखर प्रेम के , पढ़ै सो पंडित होय।

ख) शिल्पगत विशेषताए

ये कवि संत अथवा सुधारक पहले थे और कवि बाद में । दूसरे अधिकतर कवि अशि थे। इसलिए उनके काव्य का शिल्प पक्ष उतना सश€त नहीं हो पाया, जितना सूर या तुलसी का । इस काव्य की शिल्पगत विशेषताएं इस प्रकार है:-

- **भाषा:-** संत कवियों ने जनता के लिए जनता की भाषा में काव्य रचना की । स्थान-स्थान पर घूम कर अपने उपदेशों के माध्यम से ये जनता का मार्गदर्शन करते थे । इसलिए उनकी भाषा में **पंजाबी, फारसी, अरबी, राजस्थानी** आदि भाषाओं के शŽद मिलते हैं। इस मिली जुली भाषा व खिचड़ी भाषा की संज्ञा दी जाती है। डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी कहते है :-

कबीर बाणी के डि€टेटर है।

भाषा उनके सामने कुछ लाचार सी दिखाई देती है

- उसमें इतनी शि€त नहीं कि इस लापरवाह फ€कड़ की किसी बात को नहीं कर सके । संत कवियों के सिद्धों एवं नाथों के **पारिभाषिक शŽदों** का भी प्रयोग मिलता हैं। जैसे शून्य इंगला-पिंगला आदि।

- **क्फ.अलंकार :-** संत कवियों ने अपने काव्य पर अलंकारों का मुलम्मा नहीं चढ़ाया । अलंकारों का प्रयोग बड़े ही स्वाभाविक रूप से इनके काव्य में हुआ है। इनके काव्य में मुख्य रूप से रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा विरोधाभास आदि अलंकारों का प्रयोग हुआ है। उल्टबासियाँ में विरोधाभास अलंकार है।
- **क्ब. रस :-** इस काव्य में शान्त रस की प्रधानता है किन्तु आत्मा-परमात्मा का विवेचण करते समय शृंगार की अभिव्यक्ति भी हुई है।

- **क्भ. शैली :-** संत कवियों ने जो कुछ कहा **खण्डात्मक शैली** में ही लिखा । उन्होंने अपने समाज में व्याप्त बुराइयों एं आडम्बरों का खण्डात्मक शैली में विरोध किया । काव्य रूप की दृष्टि से सारा काव्य मु€तक शैली में रचित है।
- **क्म. छंद:-** संत काव्य अधिकतर दोहा छंद में रचित है। इन कवियों ने साखियों के लिए दोहा और रमैनी के लिए चौपाई छंद का प्रयोग किया । इन्होंने सबद गेय रूप में लिखे। वे रागरागनियों में निबद्ध है। इस काव्य में कवित और सवियों छंद भी मिलते हैं।

निष्कर्षः- संत काव्यधारा की भावगत और शिल्पगत विशेषताओं पर दृष्टिगत करने पर ज्ञात होता है कि संतकाव्य धारा में कवियों ने अपने युग में अभिव्य€त दी है यद्यपि कवियों के काव्य का भावपक्ष की अपेक्षा अधिक प्रौढ़ है। इसका कारण यह है कि सामान्य जनता का मार्ग दर्शन करने के लिए उन्हीं की भाषा के प्रयोग आवश्यकता थी । डॉ. गणपति चंद्र गुप्त के शŽदों में :

भाषा चाहे कैसी भी हो, भाष श्रेष्ट होने चाहिए,
यह उ€त संत काव्य पर पूर्णतः चरितार्थ होती है।

धन्यवाद।

डॉ. ज्योति गोगिया (विभागाध्यक्ष)

स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग

हंसराज महिला महाविद्यालय,

जालन्धर। चलभाष--स्त्रत्त्क्व-क्क्त्स्त्रस्त्र

ई-मेल-jyotigogia_70@rediffmail.com